उत्तरांचल दीप

संपादकीय

बड़ी सफलता

अस्सी के दशक में पंजाब के आतंकवादियों के खिलाफ जब सख्ती बरती जाती थी तो वह भी बौखला जाते थे। लेकिन सुरक्षा बलों ने जब आतंकियों का सफाया करने की ठान ली तो खत्म करके ही दम लिया। यही पुनरावृत्ति अब कश्मीर में हो रही है।

आतंकवादी संगठन कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल नहीं होने देना चाहते हैं। जबकि भारतीय सेना ने कश्मीर घाटी में आपरेशन आल आउट के जरिये आतंकवादियों का खात्मा करने का संकल्प ले रखा है। इसी अभियान के तहत सेना अब तक दो सौ से अधिक आतंकवादियों को इस साल मौत के घाट उतार चुकी है। सेना को उस समय बड़ी सफलता मिली जब मुंबई हमले के मास्टरमाइंड जकीउर रहमान लखवी के भतीजे समेत छह आतंकवादियों को एक ही दिन मुठभेड़ में ढेर कर दिया। आतंकवादियों के सरगना हाफिज सईद, मौलाना मसूद अजहर, जकीउर रहमान लखवी, सलाउद्दीन आदि पाकिस्तान से अपने रिश्तेदारों को भेजकर स्थानीय युवाओं को आतंकवादी बनाते हैं। इस साल के शुरू में खुफिया तंत्र ने रिपोर्ट दी थी कि पाकिस्तान से घुसपैठ कर करीब ढाई सौ आतंकवादी कश्मीर घाटी में आकर छिपे हुए हैं। पाकिस्तान से आने वाले आतंकवादियों को स्थानीय लोग पनाह देते हैं। इसलिए सेना ने सघन तलाशी अभियान चलाया है। इसके अलावा अलगाववादियों पर भी शिकंजा कसा है। अलगाववादियों को हिरासत में लेने के बाद कश्मीर में स्थानीय युवाओं द्वारा सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी में तो कमी आई है। क्योंकि अलगाववादियों को पाकिस्तान से धन मिलता था। उस धन को अलगाववादी स्थानीय युवाओं को देते थे और सुरक्षा बलों पर पथराव करने के लिए कहते थे। टीवी चैनल के स्टिंग ऑपरेशन में अलगाववादियों के एक सदस्य ने पाकिस्तान से फंडिंग को कबूल किया तो सुरक्षा बलों ने अलगाववादियों की धरपकड़ शुरू कर दी। सीमा पर चौकसी और बैंक खातों पर निगरानी के कारण पाकिस्तान से आने वाले धन पर भी रोक लगी है। पांच सौ और हजार रुपये के नोट बंद होने से पाकिस्तान से आने वाले नकली नोट भी बेकार हो गये। दो हजार रुपये का नोट चलन में बहुत कम है। इस नोट का नकली बनना मुश्किल है। इसी तरह पांच सौ का नया नोट भी नकली बनाना कठिन है। पाकिस्तान से फंडिंग नहीं हो पाने से अलगाववादी संकट में हैं। कश्मीर का युवा बिना पैसे के सुरक्षा बलों पर बिना वजह पथराव नहीं कर सकता। भारत के थल सेनाध्यक्ष जनरल बिपिन रावत ने स्पष्ट कह दिया है कि कश्मीर में सुरक्षा बलों को आतंकवादियों के हाथों मरने नहीं देंगे। शहीद जवान को श्रद्धांजलि देने का सिलसिला अब बंद होगा। हालांकि कश्मीर के राजनीतिक दल नेशनल कांफ्रेंस और अन्य पार्टियां सेना की सख्ती का विरोध कर रही हैं। लेकिन सेनाध्यक्ष नरमी बरतने को तैयार नहीं हैं। भतीजे के मारे जाने के बाद पाकिस्तान में बैठे आतंकवादी जकीउर रहमान लखवी ने भारत के सुरक्षा बलों को धमकी दी है कि वह इसका बदला लेकर रहेगा। यह कोई नई बात नहीं है। अस्सी के दशक में पंजाब के आतंकवादियों के खिलाफ जब सख्ती बरती जाती थी तो वह भी बौखला जाते थे। लेकिन सुरक्षा बलों ने जब आतंकियों का सफाया करने की ठान ली तो खत्म करके ही दम लिया। यही पुनरावृत्ति अब कश्मीर में हो रही है। यदि इसी तरह सुरक्षा बलों को सफलता मिलती रही तो कश्मीर घाटी में हालात जल्द काबू में आ जायेंगे।

नर्मदा के इर्दगिर्द मध्य प्रदेश की राजनीति

क्या यात्रा के माध्यम से गुल खिला पाएंगे दिग्विजय सिंह

दिग्विजय सिंह को अक्सर मुस्लिमों के पक्ष में खुलकर बोलने के लिए जाना जाता है। यहां तक कि कई बार उनके बयान उनकी पार्टी के लिए ही फजीहत का कारण बन चुके हैं। बावजूद इसके कांग्रेस में उनका कद कभी कम नहीं हुआ। उन्हें दूरदृष्टि वाला राजनेता माना जाता है।

मध्य प्रदेश की राजनीति नर्मदा के इर्दगिर्द चक्कर लगा रही है। पहले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नर्मदा किनारे की यात्रा की और फिर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस महासचिव दिग्विजय सिंह पैदल नर्मदा यात्रा पर निकल पड़े। राजनीति से अवकाश लेकर छह महीने की नर्मदा यात्रा पर निकले कांग्रेस महासचिव दिग्विजय सिंह इसे धार्मिक यात्रा बता रहे हैं लेकिन इसके राजनीतिक निहितार्थ से कोई भी इनकार नहीं कर सकता। अपने गुरु द्वारिका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद का आशीर्वाद लेकर दिग्गी राजा ने विजयादशमी के दिन अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ 3,300 किलोमीटर लंबी और लगभग छह माह तक चलने वाली नर्मदा परिक्रमा प्रारंभ की है। इस यात्रा में उनके बेटे जयवर्धन सिंह, भाई लक्ष्मण सिंह व उनकी पत्नी अमृता राय भी मौजूद हैं। दिग्विजय सिंह को अक्सर मुस्लिमों के पक्ष में खुलकर बोलने के लिए जाना जाता है। यहां तक कि कई बार उनके बयान उनकी पार्टी के लिए ही फजीहत का कारण बन चुके हैं। बावजूद इसके कांग्रेस में उनका कद कभी कम नहीं हुआ। उन्हें दूरदृष्टि वाला राजनेता माना जाता है। अर्जुन सिंह के स्टाइल में राजनीति करने वाले दिग्गी राजा अपने लोगों की मदद आउट आफ वे जाकर भी करने के लिए विख्यात हैं। यही कारण है कि मध्य प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में उनकी आज भी जबरदस्त पकड़ है। मुस्लिम मुद्दों पर अक्सर अपनी आवाज बुलंद करने वाले दिग्विजय सिंह के बारे में यह बात बहुत कम लोगों को ही पता होगा कि वे किसी भी अन्य आम हिंदू जैसा ही नियमित रूप से हिंदू कर्मकांडों का पालन करते हैं। जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानंद के परम शिष्यों में से एक दिग्विजय सिंह स्नान, ध्यान व पूजा पाठ किये बगैर नाश्ता तक नहीं करते। राघवगढ़ के राजमहल से दिल्ली के सत्ता गलियारों तक अपनी मजबूत पकड़ रखने वाले दिग्गी राजा के बारे में कहा जाता है कि जब वे हाशिए पर होते हैं, तब भी बहुत कुछ करने की क्षमता रखते हैं। राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी दिग्विजय सिंह की नर्मदा किनारे की इस यात्रा से मध्य प्रदेश की राजनीतिक दशा व दिशा में बहुत बड़ा भूचाल जरूर आएगा। दिग्विजय सिंह को राजनीति का चाणक्य भी कहा जाता है। कहा जाता है कि दिग्विजय सिंह राजनीति नहीं करते बल्कि राजनीति का दूसरा नाम दिग्विजय सिंह है। इतिहास गवाह है कि उन्होंने कई बार हारी हुई बाजी को एन मौके पर पलट दिया है। मध्यप्रदेश कांग्रेस में यदि समर्थकों के लिहाज से देखें तो दिग्विजय सिंह को ज्योतिरादित्य सिंधिया, कमलनाथ, सुरेश पचौरी या अन्य क्षेत्रीय क्षत्रप भी नजरअंदाज नहीं कर सकते। उन्होंने अपनी इस यात्रा को धार्मिक अवश्य घोषित किया है परंतु उनका राजनीतिक चोला उनके साथ है। परिवार का हर वह सदस्य जो सक्रिय राजनीति में है, उनके साथ चल रहा है चाहे वह उनके भाई लक्ष्मण सिंह हों, बेटे जयवर्धन सिंह या पत्नी अमृता राय। अपने बयानों से अक्सर सुर्खियों में रहने वाले मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के कद्दावर नेता दिग्विजय सिंह की इस धार्मिक यात्रा को सियासी नजरिए से देखें तो यह मध्य प्रदेश के लगभग 120 विधानसभा क्षेत्रों से होकर गुजरेगी। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में अगले साल के अंत में विधानसभा चुनाव है। राजनीतिक गलियारे में दिग्विजय की इस यात्रा को राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर अपना कद बड़ा करने के लिए एक 'मास्टर स्ट्रोक' के रूप में माना जा रहा है, बावजूद इसके कि दिग्विजय सिंह ने अपनी यात्र शुरू करने के पहले ही साफ कर दिया था कि उनकी यात्रा धार्मिक और अध्यात्मिक है, इसलिए इस दौरान वह राजनीति पर बात नहीं करेंगे। भले ही प्रदेश की राजनीति में दिग्विजय सिंह को गुजरा हुआ वक्त और मिस्टर बंटाधार की उपाधि के साथ-साथ बीजेपी दिग्विजय की सक्रियता को अपने लिए फायदे का सौदा बताती है लेकिन हकीकत यह है कि आज भी प्रदेश के तमाम कांग्रेसी दिग्गजों की अपेक्षा पूरे प्रदेश में दिग्विजय के समर्थकों की संख्या सबसे ज्यादा है। खासकर दिग्विजय की यह नर्मदा यात्रा भाजपा खेमे और शिवराज सरकार के लिए चिंता का सबब बन गयी है। यह यात्रा कांग्रेस में जोश भरने के साथ शिवराज सरकार के लिए खतरे की घंटी बजने का संकेत दे रही है। 70 वर्षीय दिग्विजय ने नरसिंहपुर में अपने गुरु द्वारका-शारदा पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती का आशीर्वाद लेकर इस यात्रा की शुरुआत की। एक दिन में 15 से 20 किलोमीटर चलने का लक्ष्य रखा गया है। दिग्विजय की इस यात्रा में उनके समर्थक लगातार उनसे मिलने आ रहे हैं और वो भी यात्रा में कुछ दूर तक जुड़ जाते हैं। यात्रा के दौरान महिलाएं दिग्विजय सिंह की पत्नी अमृता राय से मिलती हैं और अपनी समस्याएं सुनाती हैं। नरसिंहपुर के बरमान घाट से जय नर्मदे के नारे के साथ प्रारंभ नर्मदा यात्रा में दिग्विजय यह जायजा लेंगे कि प्रदेश सरकार ने नर्मदा नदी के किनारों पर करोड़ों रुपये खर्च कर कैसा पौधारोपण किया है। इसके साथ ही यात्रा के दौरान दिग्विजय नर्मदा नदी में बड़े पैमाने पर होने वाले अवैध रेत खनन का साक्ष्य भी यात्रा के समापन पर रखेंगे।

-बद्रीनाथ वर्मा

ड्रोन रोबोट किस तरह खा रहे नौकरियां?

अगले दस साल में 17 फीसद अमरीकी नौकरियां ड्रोन और रोबोट निगल जाएंगे। अमरीका ही नहीं पूरी दुनिया में आज ड्रोन और रोबोट मिलकर बहुत से ऐसे काम कर रहे हैं जिनके लिए पहले इंसानों की जरूरत हुआ करती थी। आज दो ड्रोन मिलकर सौ लोगों के बराबर काम उसी वक्त में निपटा देते हैं।

इस साल अप्रैल से अक्तूबर के बीच ड्रोन और रोबोट मिलकर 89 हजार अमरीकियों की नौकरी खा गए। अगले दस साल में 17 फीसद अमरीकी नौकरियां ड्रोन और रोबोट निगल जाएंगे। अमरीका ही नहीं पूरी दुनिया में आज ड्रोन और रोबोट मिलकर बहुत से ऐसे काम कर रहे हैं जिनके लिए पहले इंसानों की जरूरत हुआ करती थी। आज दो ड्रोन मिलकर सौ लोगों के बराबर काम उसी वक्त में निपटा देते हैं। ड्रोन बनाने वाली बहुत-सी कंपनियां तो कहती हैं कि उनके ड्रोन सौ फीसद खरा काम करते हैं। यानि बिना गलती किए हुए काम निपटा देते हैं। ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शॉपिंग और रिटेल सेक्टर की ज्यादातर कंपनियां रख-रखाव यानि लॉजिस्टिक्स के लिए ड्रोन और रोबोट का इस्तेमाल कर रही है। वह पैकिंग करते हैं। सामान को सलीके से रखते हैं। हर सामान का हिसाब रखते हैं। अमरीका की बड़ी रिटेल कंपनी वॉलमार्ट के देश भर में ढाई लाख से ज्यादा गोदाम हैं। इनमें छोटे से छोटा गोदाम भी 17 फुटबॉल फील्ड के बराबर होता है। ऐसे विशाल वेयरहाउस में आजकल रोबोट और ड्रोन ही बड़ी जिम्मेदारियां निपटाते हैं। वह फोर्क-लिफ्ट की मदद से सामान को उठाकर यहां से वहां रखते हैं। सामान की छंटनी करते हैं। सबसे बड़ी बात कि ये आधुनिक मशीनें कमोबेश हर वह काम कर रही हैं, जो कभी इंसानों के हवाले हुआ करता था। फर्क ये है कि इन मशीनों से काम जल्दी और आसानी से हो रहा है। कंपनियों के लिए रोबोट और ड्रोन से काम लेना सस्ता पड़ रहा है। अमरीका के मशहूर मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के असिस्टेंट प्रोफेसर फदेल अदीब कहते हैं कि हर साल कंपनियां सामान गुम हो जाने या यहां-वहां रख दिए जाने की वजह से अरबों डॉलर का नुकसान झेलती हैं। हिसाब-किताब में गड़बड़ी से भी कंपनियों को भारी नुकसान होता है। आज गोदाम में रखे हर सामान का हिसाब रखने के लिए हर एक सामान को गिनने, उसके बार कोड की मदद से उसकी कीमत लिखने का काम बहुत मुश्किल हो गया है। ड्रोन और रोबोट, इंसानों के मुकाबले ये काम बेहतर ढंग से और तेजी से कर लेते हैं। उनकी मदद से रात में भी काम होता रहता है। वह ये हिसाब भी फौरन लगा लेते हैं कि किस सामान की ज्यादा मांग है और कौन-सा सामान कम बिखर रहा है। रख-रखाव में हेर-फेर भी रोबोट की पकड़ में जल्दी आ जाता है। यही वजह है कि उड़ने वाले ड्रोन और रोबोट का आज ई-कॉमर्स और रिटेल कंपनियां ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल कर रही हैं। उड़ने वाले रोबोट बनाने वाली कंपनी पिंक के सीईओ मैट इयर्लिंग कहते हैं कि नई मशीनों के आने से गोदाम में रख-रखाव का काम बहुत आसान हो गया है। अब अगर इंसान पांच फीसद भी गलती करते हैं तो कई गोदाम में पांच-पांच फीसद की गड़बड़ी को मिलाएं तो नुकसान करोड़ों डॉलर का हो जाता है। इस नुकसान की भरपाई ड्रोन और रोबोट की मदद से की जा सकती है। उड़ने वाले रोबोट रात-दिन काम कर के इस नुकसान को होने से बचा लेते हैं। ईयर्लिंग की कंपनी हाइड्रोजन फ्यूल सेल से चलने वाले ड्रोन बनाती है। ये बैटरी से चलने वाले ड्रोन के मुकाबले ज़्यादा देर तक काम कर सकते हैं। फ्रांस की कंपनी हार्दिस ग्रुप ने सामान की गिनती करने वाला ड्रोन बनाया है। इसका नाम है- आईसी। एंड्रॉयड से चलने वाले इस ड्रोन में आप को उड़ने का डेटा भर फीड करना होता है। फिर इसके बाद सारा काम ये खुद करता है। वैसे रिटेल सेक्टर की कंपनियां पिछले पांच-छह साल से मशीनों का ज़्यादा इस्तेमाल करने लगी हैं। 2012 में फैशन ब्रांड नेट-ए-पोर्टर ने दावा किया था कि उसके रोबोट इंसानों से पांच सौ गुना बेहतर काम करते हैं।

-टॉम जैक्सन

इन बॉक्स

सियासी उठापटक और चुनाव

महोदय,

हिमाचल प्रदेश छोटा राज्य है और उसकी बड़ी बातें हैं। यहां उम्दा दर्जे के फल, सब्जी, अनाज का उत्पादन होता है। यह नैसर्गिक दृश्य एवं वन भंडारों से भरपूर है। यहां के मनोरम दृश्य सब का मन मोह लेते हैं। यह जड़ी बूटियों से धनी है। यहां अब की बार विधानसभा चुनाव में भारी सियासी उठापटक हो रही है। इस चुनाव में मात्र दो दल रहने वाले हैं। मुकाबला मुख्य रूप से कांग्रेस एवं भाजपा के बीच होगा। कांग्रेस राज्य में और विरोधी दल भाजपा केंद्र में सत्तारूढ़ है। भाजपा कांग्रेस को इस राज्य से भी बेदखल कर इसमें सत्तासीन होना चाहती है। भाजपा को ऐसे मामलों में लगातार विजय मिलती जा रही है। यहां भी ऐसा मंजर देखने को मिल सकता है। भाजपा कांग्रेस शासित इस राज्य पर कब्जा करना चाहती है जबकि कांग्रेस के शीर्ष नेता इसे किसी भी तरह से बचाना चाहते हैं। दोनों दलों के बड़े नेता मैदान में प्रचार करने उत गये। जीत हार समय के गर्भ में है। परिणाम कुछ भी हो सकता है। हिमाचल में चुनाव की घड़ी आने के पूर्व ही कांग्रेस में बगावत का नजारा दिखने लगा है। सत्ता पर काबिज कांग्रेस के भीतर उठापटक अब खुलकर सामने आ गयी है। यहां सरकार और संगठन के बीच की लड़ाई सार्वजनिक होती जा रही है। प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह अब हाईकमान पर हमला बोलने लगे हैं। वीरभद्र कांग्रेस के प्रदेश हाई कमान का विरोध कर रहे हैं।

-सौरभ बिष्ट, देवलचौड़, हल्द्वानी।

नॉलेज बैंक

तोतों ने कुतरे लाखों डॉलर के ब्रॉडबैंड कनेक्शन

नेशनल ब्रॉडबैंड नेटवर्क (एनबीएन) कंपनी के अनुसार तोतों ने उनके ब्रॉडबैंड तारों को चबा-चबाकर खराब कर दिया, जिसे दुरुस्त करने में कई हजार डॉलर खर्च हो चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया में ब्रॉडबैंड कनेक्शन के धीमे रहने की शिकायत हमेशा की जाती है। इंटरनेट स्पीड के मामले में ऑस्ट्रेलिया दुनिया में 50वें स्थान पर आता है। ऑस्ट्रेलिया में फिलहाल इंटरनेट स्पीड 11.1 मेगाबाइट प्रति सेकेंड है, जो दुनिया के विकसित देशों के मुकाबले बहुत कम है। ऑस्ट्रेलियाई सरकार इसे सुधारने का प्रयास कर रही है और इसके लिए नेशनल टेलिकम्युनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट भी शुरू किया गया है, जो 2021 में पूरा होगा। एनबीएन का मानना है कि उनकी ब्रॉडबैंड तारों को कई जगहों पर नुकसान पहुंचा है, इसलिए उसे ठीक करने का खर्च बढ़ सकता है। एनबीएन के इंजीनियरों ने ब्रॉडबैंड में समस्या का पता लगाया तो पाया कि उनकी तारों को जगह-जगह से चबाया गया था। इसे तोतों की एक प्रजाति कॉकाटू ने चबाया था। आमतौर पर ये तोते फल, नट और लकड़ी ही चबाते हैं। इन खराब तारों को ठीक करने में एनबीएन कंपनी ने अभी तक 80 हजार ऑस्ट्रेलियाई डॉलर खर्च कर चुकी है। जानवरों के व्यवहार को समझने वाले गिसेला कैल्पन ने बताया, 'आमतौर पर तो ये तोते केबल नहीं चबाते लेकिन हो सकता है कि उन्हें इन तारों में स्वाद मिला हो या फिर शायद वे तार के रंग की तरफ आकर्षित हुए हों।' गिसेला बताती है, ये तोते अपनी चोंच को नुकीला बनाने के लिए हमेशा कुछ न कुछ रगड़ते रहते हैं। बदकिस्मती से उन्होंने तारों को इसके लिए चुना।'

जीवन की सीख

देश की एकता, अखंडता और समृद्धि में तीर्थस्थलों की सकारात्मक भूमिका रही है। देश की सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण तीर्थ स्थल करते आए हैं।

तीर्थस्थल निर्मित नहीं होते। विकसित जरूर किये जा सकते हैं। विकास एवं विस्तार कार्य भी प्रभु की इच्छा से ही होता है और प्रभु की इच्छा से लोगों को तीर्थ निर्माण, विकास एवं विस्तार कार्यों में सहभागी होने का सौभाग्य मिलता है। तीर्थ स्थलों की महत्वपूर्ण भूमिका को जानना जरूरी है। देश की एकता, अखंडता और समृद्धि में तीर्थस्थलों की सकारात्मक भूमिका रही है। देश की सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण तीर्थ स्थल करते आए हैं। यही वजह है कि विदेशी आक्रमणकारियों ने सर्वप्रथम मंदिरों को ही अपना निशाना बनाया। उन्हें लूटा, तोड़ा, उनका विध्वंस किया। सोमनाथ का उदाहरण आने वाले युगों तक आने वाली पीढ़ियों को याद रखना होगा। मंदिर निर्माण का लक्ष्य राजनीतिक लाभ उठाने का नहीं होना चाहिए। नये निर्माण से पहले उन निर्माणों के संरक्षण की आवश्यकता है जिनका निर्माण भी सामूहिक प्रयासों से ही संपूर्ण हुआ था। गांव-गांव में, शहरों में, महानगरों में आजादी के पहले निर्मित लाखों मंदिर हैं। कुछ छोटे-छोटे हैं, कुछ बेहद भव्य और कुछ खंडहर में तब्दील हो चुके हैं। कुछ ज्यादा ही उपेक्षित हैं। इनमें से अधिकांश मंदिर ऐसे भी हैं जहां संत, महात्माओं ने विश्राम किया था। सत्संग भी आयोजित किये थे। जन संचेतना प्रवाहित की थी। हमारे चारों धाम व अन्य प्रमुख तीर्थ भी दुनिया के लिए मिसाल हैं। अयोध्या भी एक मिसाल है। प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र कल थी और आने वाले दिनों में रहेगी। मथुरा, वृंदावन, काशी, सोमनाथ, इलाहाबाद, अमरकंटक, कन्याकुमारी सहित सैकड़ों स्थान मार्गदर्शन केंद्र हैं। धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन ईश्वर के आदेशानुसार ही होते हैं और ईश्वरीय कृपा से ही सफलतापूर्वक संपन्न भी होते हैं। मंदिर पवित्र स्थल हैं। धार्मिक आस्था के केन्द्र हैं। यहीं से आध्यात्मिक ज्ञान का प्रवाह समाज में प्रवाहित होती है। जन संचेतना प्रवाहित होती है और समाज में बंटे भागों को एकत्रित करती है। जोड़ने का कार्य मंदिर ही करते हैं।

-राजेन्द्र मिश्र राज

पद चिह्न

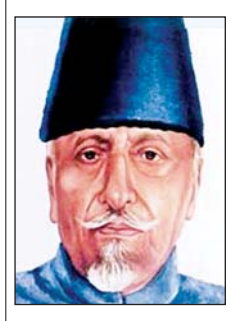

मौलाना आजाद आजादी के बाद देश के शिक्षामंत्री बने। 1952 में रामपुर व 1957 में गुड़गांव से वे चुनाव जीते। मौलाना आजाद ने कुरान मजीद का अंग्रेजी में तर्जुमा भी किया।

हिन्दुस्तान के जर्रे-जर्रे से मोहब्बत की इन्तेहा रखने वाले देश भक्त मौलाना अबुल कलाम आजाद के इन्तकाल के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था- 'अब मौलाना आजाद जैसा काबिल व्यक्ति और देशभक्त कभी पैदा नहीं होगा।' यह मौलाना आजाद का लिखने पढ़ने का शौक ही था कि उन की मुलाकात महात्मा गांधी से हुई। दरअसल सन् 1912 में मौलाना आजाद ने एक उर्दू साप्ताहिक 'अल हिलाल' शुरू किया। इसमें तरह-तरह के लेख प्रकाशित होते थे, विशेष रूप से देश प्रेम और भारत की आजादी के सम्बन्ध में। गांधी जी को मौलाना का यह कार्य बहुत पसन्द आया। बस महात्मा गांधी का मौलाना से मिलना जुलना होने लगा और बहुत ही थोड़े वक्त में मौलाना आजाद गांधी जी के प्रिय हो गये। हिन्दुस्तान पाकिस्तान विभाजन के जनक मोहम्मद अली जिन्ना को मौलाना आजाद ने बहुत समझाया कि विभाजन की बात ठीक नहीं है। मुसलमानों को आजाद भारत में पूरा मान सम्मान दिया जायेगा किन्तु जिन्ना ने एक नहीं मानी और भड़काऊ भाषण देकर लोगों को जुनून की हद तक विभाजन के लिये तैयार कर लिया। जिन्ना के भड़काए लोगों को बार-बार मौलाना आजाद ने समझाया कि जिन्ना के द्वारा दिखाया जा रहा बंटवारे का ख्वाब झूठा है, जिन्ना का यह सौदा घाटे का सौदा है पर तब लोग होश की नहीं, जोश की बात कर रहे थे। मौलाना आजाद की बात नहीं मानी गई। जिस वक्त देश का विभाजन हुआ, मौलाना आजाद ने दिल्ली की जामा मस्जिद की सीढ़ियों से पूरे देश के मुसलमानों को संबोधित किया और जाते हुए लोगों के बारे में कहा कि जो लोग पाकिस्तान जा रहे हैं, या पाकिस्तान का ख्वाब देख रहे है, वे लोग राह से भटक गये हैं। उनके दिमाग सो गये है। उन्हें भूलना ही बेहतर है। मौलाना आजाद का यह भाषण बहुत ही भावुक था जो लोगों के दिलों को छू गया। उन के इस भाषण को सुन कुछ लोगों ने अपने कदम रोक लिये लेकिन कुछ लोग जिन्ना के साथ पाकिस्तान चले गये थे। 'इन्डिया विन्स फ्रीडम' में मौलाना आजाद ने लिखा था कि जिन लोगों ने विभाजन का सपना देखा है, ये सपना सिर्फ सपना रहेगा और 25-30 वर्ष में ही टूट जायेगा। ऐसा हुआ भी। जो मुसलमान पाकिस्तान नये-नये ख्वाब लेकर गये थे, कुछ ही दिनों में उन लोगों के सारे ख्वाब टूट गये। मौलाना आजाद आजादी के बाद देश के शिक्षामंत्री बने। 1952 में रामपुर व 1957 में गुड़गांव से वे चुनाव जीते। मौलाना आजाद ने कुरान मजीद का अंग्रेजी में तर्जुमा भी किया।

-शादाब जफर